धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

नवम्बर 2009

देवात्मा अंक

* परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव।

* भगवान देवात्मा की अद्वितीय देव प्रकृति

* अनोखी भिक्षा और अनोखी आत्मिक अवस्था।

* परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अति कल्याणकारी देव अमृत

* अधिकारी मनुष्यों में भगवान देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज का अद्वितीय कार्य।

* सच्ची स्वाधीनता वा स्वतंत्रता के दाता भगवान देवात्मा।

* एक महान सत्य के दर्शन

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव।

मनुष्य जगत के विकास क्रम में परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव निश्चय अद्वितीय और सर्व हितों का दाता आविर्भाव है। आज से प्राय: 22 वर्ष पहले परम पूजनीय भगवान देवात्मा के एक जन्म महोत्सव के शुभ अवसर पर उनके सैकड़ों सेवकों, सेवकाओं और अन्य श्रद्धावान स्त्री पुरुषों आदि की ओर से उनकी सेवा में जो अभिनन्दन पत्र पेश किया गया था, उस में और कई विषयों के भिन्न भगवान् देवात्मा के अद्वितीय आविर्भाव के विषय में जिन भावों का प्रकाश किया गया था, उसे हम आवश्यक शाब्दिक परिवर्तन के अनन्तर दूसरों के लाभ के लिए नीचे दर्ज करते हैं :-

एक ऐसे विशेष काल में जब कि मनुष्य यद्यपि अपनी सभ्यता की विविध प्रकार की उन्नति के विचार से अति आश्चर्यजनक अवस्था में पहुंचा हुआ था, तथापि अपने सार और सच्चे आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में केवल यही नहीं; कि वह पूर्णत: बेसुधि और अन्धकार अथवा अज्ञान की अवस्था में था, किन्तु साधारणत: नाना प्रकार के अति हानिकारक कल्पित और मिथ्या विश्वासों के महा भयानक जाल में फंसा हुआ था, और अपने आत्मा पर नीच गति दायक शक्तियों के अधिकार के कारण क्या अपने और क्या अपने चारों ओर के अन्य अस्तित्वों के लिए नाना प्रकार से हानिकारक और दुखदाई बन रहा था, और अपने मिथ्या विश्वासों के द्वारा परिचालित होकर धर्म के नाम से जो कुछ साधन करता था, वह भी ऐसे थे कि जो कितनी ही अवस्थाओं में मिथ्या वा अधर्म मूलक होने के कारण उसके आत्मिक जीवन के लिए बहुत हानिकारक थे, तब उस की इस महा अन्धकार ग्रस्त और अधोगति प्राप्त अवस्था में अति आश्चर्य और शुभ जनक परिवर्तन और इस परिवर्तन के द्वारा पृथ्वी में एक नए युग के लाने के लिए जिस के निमित मनुष्य जगत् मानो बहुत गहरी प्रतीक्षा कर रहा था-पौषत्रदि प्रतिपद सम्बत ..... विक्रमी को परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपनी अद्वितीय देव शक्तियों को बीज रूप में लेकर आविर्भूत हुए। उस समय हमारी पृथ्वी पर जहां एक ओर चन्द्रमा अपनी सुन्दर, सुशीतल, मधुर और सुख प्रद ज्योत्सिना फैला रहा था; वहां दूसरी ओर उसका ज्योति दाता सूर्य भी अपने से अनन्त गुणा महान, आध्यात्मिक जगत् में परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देवरूपी सूर्य के प्रगट होने की मानों बाट देख रहा था। ऐसे विशेष शुभ समय में आविर्भूत होकर उन्हों ने अपनी आयु के बढ़ने के साथ-साथ अपनी देव शक्तियों को धीरे-धीरे विकसित करके देव जीवन वा देवरूप लाभ किया, कि जो निश्चय अद्वितीय और सर्व हितों का दाता है।

पूजनीय भगवान के भीतर की इन अलौकिक देव शक्तियों के विकास से जहां उन के आत्मा ने अपनी पूर्णांग गठन लाभ की, वहां मनुष्य जगत् के अधिकारी आत्माओं की रक्षा और सर्व्वोच्च भलाई का वह विचित्र मार्ग खुल गया, कि जो इससे पहले कभी नहीं खुला था। अहा! तब भगवान् देवात्मा का यह आत्मिक पूर्ण गठन प्राप्त देव आविर्भाव मनुष्य मात्र के लिए कैसे महा सौभाग्य का विषय और कैसी सर्वोच्च श्रद्धा और सन्मान की वस्तु!!

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 11

नवम्बर 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

भगवान देवात्मा की अद्वितीय देव प्रकृति

नेचर में यह एक पूर्णतः अटल सत्य है, कि मनुष्य जगत् के विकास क्रम में परम पूजनीय भगवान देवात्मा को उनकी अति विचित्र देव शक्तियों की बिना पर जो अद्वितीय देव प्रकृति प्राप्त हुई है, उस के विचार से हि उनके देवरुप में कुल मनुष्यों की तुलना में मूल अन्तर उत्पन्न हो गया है। फिर यह भी एक आत्मिक जगत् की अटल सच्चाई है, कि क्या भगवान देवात्मा की देव प्रकृति की विशेषता को और क्या कुल मनुष्यों से उन में जो मूल अन्तर उत्पन्न हो गया है, उसकी हकीकत को कोई अधिकारी जन उनकी ही देव ज्योति में देख सकता है, और निश्चय जो जन उनकी देव ज्योति को पाकर किसी अंश में भी उनके देव रूप के दर्शन करने का अधिकार पाते हैं, वह न केवल आत्मिक रूप से इस देव सूर्य में अपनी आत्मिक रक्षा और उन्नति की कुल सामग्री को देखते और बोध करते हैं; किन्तु कुल जगत् की सर्वोच्च भलाई के सामान भी देखते हैं, और निश्चय ऐसे जनों के सौभाग्य को कोई सीमा नहीं हो सकती। ऐसे जनों की दृष्टि न्यारी, उन के अनुभव न्यारे, उनकी आकांक्षाएं न्यारी, उनके भाव न्यारे और उनके भाव प्रकाश का ढंग न्यारा होता है। ऐसे ही सौभाग्यवान जनों में से एक जन ने अपने न्यारे भावों का निम्नलिखित शब्दों में प्रकाश किया है :-

"पूजनीय भगवान! आप जिस देव प्रकृति को लेकर प्रगट हुए हैं, और जो देव जीवन आप ने प्राप्त किया है, वह प्रकृति विशेष और अद्वितीय है, और वह देव जीवन एक मात्र आप का ही जीवन है। आप इस देव प्रकृति और देव जीवन के विचार से अन्य मनुष्यों से उसी प्रकार पृथक और निराले हैं, जैसे मनुष्य अन्य पशुओं से निराला और जुदा है। इस नूतन लोक वा जुदा दुनिया के आविर्भाव होकर आप के जो बोध और अनुभव हैं, वह साधारण दुनिया से बिल्कुल जुदा, उच्च और विशेष बोध और अनुभव हैं, इसलिए आप अपने इस उच्च लोक से जो कुछ देखते और बोलते हैं; वह अन्य लोग नहीं देखते और नहीं बोलते, इसलिए जब से आप ने अपना अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण किया है, तब से ही आप की सब से बड़ी कठिनाई और दिक्कत यही रही है, कि आप को दुनिया ने नहीं समझा, और आप के भावों को, आप की कामनाओं को,

आप के अनुभवों को और उनके प्रभाव को किसी और हि लोक की बाणी और मानो कोई नई प्रकार की बोली समझा और अनुभव किया है; और इसलिए उस का साथ वा उसका response नहीं दिया।

पूजनीय भगवान! मेरा जन्म ऐसे ही साधारण जनों में हुआ और मेरी पालना भी ऐसे ही साधारण जनों में हुई है। मेरे अपने बोध और अनुभव इसी दुनिया के हैं, केवल आप के साथ किसी अंश तक श्रद्धा सूत्र में बन्धकर और आप की तरफ ही निगाह होने और अपने अपनत्व के लोक वा दायरे से निकलने पर समय-समय में मुझे वह ज्योति किसी सीमा तक प्राप्त हुई, और वह बाणी प्रिय लगी है, कि जो आप के लोक की है; वरना मैं मुरदा चन्द्रवत स्वयं उस ज्योति और शक्ति से विहीन हूं कि जो आप के लोक और आप के रूप में ही वर्तमान और वहीं से प्रकाशित होती है। और इसी लिए ज्यूंहि मैं आप की ओर से मुंह हटाकर अपनी ओर कर लेता हूं, त्यूंहि मेरे लिए भी आप की ज्योति और आप की बाणी "किसी और ही लोक की बाणी" हो जाती है!!

हे देवरूप धारी भगवन! मेरा यह बहुत बड़ा अधिकार है, कि मुझे ऐसे साधनों की शिक्षा प्राप्त है, कि जिन के द्वारा मैं अपने लोक से निकल कर आपके लोक में आ सकता हूं, आपके अनुभवों और बोधों को पा सकता हूं, आप की ज्योति और शक्ति को धारण कर सकता हूं। जैसे एक कंगाल पुरूष के लिए इस से बढ़ कर और क्या अधिकार हो सकता है, कि वह राज्य परिवार में दाखिल हो जावे, वैसे हि मेरे लिए इस से बढ़कर और कोई लाभ नहीं हो सकता, कि मैं अपने नीच लोक और नीच रूप से निकलकर आपके उच्च रूप और उच्च लोक में प्रवेश कर सकूं। परन्तु इस अधिकार की प्राप्ति अटल श्रद्धा और निरन्तर देव अनुराग के बिना सम्भव नहीं है। मैं उसकी जरूरत को अनुभव करता हूं। अपने भीतर उसकी सख़्त कमी को देखकर दुखी हूं। अपने भीतर अपने रंग और अपने ढंग को रखने की हानि को देखता हूं। अपना रंग रखकर मैं जो आपके रंग में नहीं रंगा जा सकता, उसे देख रहा हूं, और ऐसी कामना करता हूं, कि मैं अपने अपनत्व का सदा विपक्षी रह सकूं, उस से विमुख हो सकूं, और आप का पक्षी ओर अनुगत बन सकूं। अपना आप त्याग और आप का रूप ग्रहण कर सकूं। मेरी गन्दी नाली की पृथक गति बन्द हो, और वह अपना आप खोकर 'गंग' में शामिल होकर 'गंग रूप' बन सके। गन्दी नाली को इससे बढ़कर कदापि कोई अधिकार नहीं प्राप्त हो सकता। भगवन! मैं अपने नीच रूप को बारम्बार परे करने का और आप को अधिकार देने का अभ्यासी हो सकूं।"

काश! की हम लोग भी देव जीवन धारी भगवान देवात्मा के इस अद्वितीय देवरुप के उनकी ही देव ज्योति में दर्शन करने का सौभाग्य वा अधिकार लाभ कर सकें, और उन से जीवन्त सम्बन्ध में जोड़ने वाले भावों को अपने भीतर उत्पन्न और उन्नत कर सकें, और उन की पूजा के द्वारा उनके महा दुर्लभ देव प्रभावों का देव प्रसाद पाकर जहां अपना अधिक से अधिक कल्याण साधन कर सकें, वहां उनके अद्वितीय आविर्भाव, उनकी अद्वितीय धर्म शिक्षा और उन के अद्वितीय कार्य और उसके अद्वितीय फलों की सच्ची महिमा को औरों में फैलाकर अपने श्रेष्ट अधिकार और जीवन को सुफल कर सकें।

अनोखी भिक्षा और अनोखी आत्मिक अवस्था।

सत्य और हित अनुरागी भगवान देवात्मा ने जब अपनी अद्वितीय देव ज्योति में देखा, कि

"मनुष्य जगत् के लोग अपने-अपने नीच अनुरागों और अपनी-अपनी नीच घृणाओं के द्वारा एक दूसरे के लिए नाना प्रकार से हानिकारक बनकर अन्मेल की दशा में हैं। वह एक दूसरे के अधिकारों वा हकूक को एक वा दूसरी विधि से छीन रहे हैं। वह एक दूसरे को अपने विविध प्रकार के नीच कर्मों के द्वारा सता रहे हैं, और एक दूसरे की शान्ति को भंग कर रहे हैं।"

तब वह इस सब प्रकार की मिथ्या और पाप को नष्ट करने अथवा उक्त "अन्मेल की दशा" को मिटाने और सत्य और शुभ का राज्य लाने के निमित्त अपना अनोखा जीवन व्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर हो गए, और उसकी सिद्धि के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व भेंट कर दिया।

अनोखी भिक्षा

ऐसी अनोखी भेंट अथवा ऐसे अनोखे जीवन व्रत का शुभ अनुष्ठान करते समय उन्होंने उसकी सिद्धि में सहाय पाने के निमित्त वर्तमान जनों से जिस प्रकार की भिक्षा की अपील की थी, वह भी पूर्णतः अनोखी और अद्वितीय व्रतधारी भगवान् देवात्मा की अद्वितीय महिमा को अजीब प्रकार से प्रगट करने वाली है। इस अनोखी भिक्षा की अपील करते हुए भगवान देवात्मा ने जो कुछ फरमाया था, वह नीचे दिया जाता है :-

"अन्त में मैं अपने जीवन व्रत की सिद्धि में सहाय पाने के निमित्त तुम सब से कुछ-कुछ भिक्षा मांगता हूं। भिक्षा का शब्द सुनकर डर मत जाना। मैं तुम से इस समय आशीर्वाद चाहता हूं। तुम में से जो नौजवान यहाँ बैठे हो, वह मुझे अपनी भरी जवानी का उत्साह प्रदान करें, जो बूढ़े हों, और इस उमर में पहुंच कर संसार की किसी एक वा दूसरी बात से उदासीन बन गए हों, वह मुझे अपना यह भाव दान दें; जो बच्चे हों, वह अपना निश्चिन्त भाव प्रदान करें; और जो सती स्त्रियां हों, वह अपना सतीत्व भाव दान दें।"

वाह! अनोखे व्रतधारी भगवान् देवात्मा की अपने ऐसे व्रत की सिद्धि में सहाय के निमित्त कैसी अनोखी भिक्षा की अपील!!

अनोखी आत्मिक अवस्था।

फिर मनुष्य जगत् के शिरोमणि परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपना अनोखा जीवन व्रत ग्रहण करके और उसके लिए अपना सर्वस्व भेंट चढ़ा के और उक्त प्रकार की अनोखी भिक्षा की अपील करके अपने तंई जिस कदर स्वाधीन, सुखी, धन्य-धन्य और कृतार्थ बोध किया, उसका भी शब्दों के द्वारा वर्णन नहीं हो सकता। इस विषय में भी स्वयं भगवान् देवात्मा की देवबाणी नीचे दी जाती है :-

"व्रत सम्बन्धी अनुष्ठान के सम्पन्न हो जाने पर मैं बिल्कुल एक नए लोक में पहुंच गया। मेरे सब उच्च भाव बहुत सतेज और सबल हो गए। मुझ में नई ज्योति प्रकाशित हुई। जैसे एक-एक

कैदी कैद की मियाद के खत्म होने और बेड़ियों के कटने पर, अपने आप को स्वाधीन और सुखी अनुभव करता है, वैसे ही मैंने अपने आप को, न केवल स्वाधीन और सुखी, किन्तु उस से सैकड़ों गुणा बढ़कर कृतार्थ बोध किया। एक मछली जो पानी से बाहर किसी सूखी ज़मीन पर पड़ी हो, वह वहां से निकल कर और पानी में प्रवेश करने का अवसर पाकर, अपने आप को जिस प्रकार अनुभव करती है, उसी प्रकार मैंने अपने आप को अनुभव किया। जिस नेचर का विकासकारी नियम इस शुभ घटना के लाने के लिए, लाखों वर्षों से संग्राम कर रहा था, उस के प्रत्येक विभाग ने मानो सहस्त्र-2 मुख से मुझ पर अपना आशीर्वाद किया। और इस गुप्त परन्तु महान आशीश को पाकर मेरा हृदय धन्य-धन्य होकर उछलने लगा, और निर्मल और उच्च आनन्द की अपूर्व लहरें लेने लगा। मैंने अनुभव किया, कि अब मेरे जन्म लेने का महान उद्देश्य, एक सीमा तक सफल हुआ।"

वाह! धन्य-धन्य और कृतार्थ बोध करने के विचार से भी भगवान् देवात्मा की कैसी निराली और सर्वोच्च आत्मिक अवस्था।।

हमारी यह हृदय गत कामना है, कि हम देव जीवन धारी भगवान देवात्मा के देवरूप की उपरोक्त नाना विषयों में अति महान महिमा वा उन की अति विचित्र देव लीला को उन्हीं की देव ज्योति में अधिक से अधिक देख और उपलब्ध कर सकें, और उनके अमूल्य देव प्रभावों की महा हितकर भिक्षा पाकर अपना अधिक से अधिक कल्याण साधन कर सकें।

हित प्रेम सत्य अनुराग में, जब होके विकसित आपने,
सत्य शिव सुन्दर ही देखा, लक्ष्य अपना आपने।
लक्ष्य अपना करके घोषण, ले लिया व्रत आपने,
करके सारा त्याग उसको, है निभाया आपने।
मिशन अपना आपने, हर हाल में पूरा किया,
जो था उसमें विघ्नकारी आपने वह तज दिया।
दोस्तों सम्बन्धियों और सेवकों को तज दिया,
मान, धन, आराम सुख, जो कुछ कभी माने हुआ।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अति कल्याणकारी देव अमृत

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ज्यों-ज्यों अपनी देव शक्तियों में उन्नत होते गए, त्यों-त्यों वह एक तरफ अपने पहले के संस्कार प्राप्त मिथ्या विश्वासों को त्याग करते चले गए, और दूसरी तरफ अपनी देव ज्योति में जो कुछ अमूल्य आत्मिक सत्य देखते गए, उन्हें ग्रहण करते चले गए। फिर उन्हें मिथ्या और अशुभ के नष्ट करने और इस पृथ्वी में सत्य और शुभ का राज्य अथवा देवराज्य लाने के निमित सारी उमर जिस देव युद्ध को करना पड़ा है, उस में भी उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। इस अनोखे युद्ध में उन्हें जो कुछ भी त्याग और संग्राम करना पड़ा है, जिस किसी भी सुख और आराम की वा जिस किसी सम्बन्धी और सामान की भेंट देनी पड़ी है, उस में भी उन्होंने कोई कमी नहीं की; अतएव हर प्रकार का पूर्ण त्याग और तप कर उन्होंने मानो मनुष्य मात्र को अपना वह महादुर्लभ देव अमृत प्रदान किया है, कि जिस की उपमा शब्दों में ब्यान नहीं हो सकती। अर्थात् उन्हों ने आत्मिक जगत् के देव सूर्य होकर जहां अपनी देव ज्योति में

(1) मनुष्य के आत्मा के अस्तित्व,

(2) उसके आत्मा का उसके शरीर के साथ सम्बन्ध

(3) उस के आत्मा की विविध प्रकार की शक्तियों से संयुक्त गठन

(4) उसकी इस गठन में विविध प्रकार के सुख विषयक अनुराग,

(5) उसमें इन सुख अनुरागों से उत्पन्न विविध प्रकार की घृणाओं, मिथ्या और विविध प्रकार के दुराचारों की उत्पत्ति

(6) इन सब से उसका महा शोचनीय पतन

(7) ऐसे पतन से उसकी मोक्ष, और

(8) उसमें जीवन बर्द्धक विविध प्रकार की उच्च शक्तियों के विकास की आवश्यकता और विधि आदि नाना विषयों के सम्बन्ध में अति गूढ़, अति आवश्यक, अति विचित्र और अति मूल्यवान सत्य देखे और प्रकाशित किए हैं, वहां अपने देव तेज का शत-शत और सहस्त्र-2 नर नारियों पर अमल करके उन के जीवन का तख़्ता पलट दिया है, और कुल जगत् के उद्धार और सर्वोच्च कल्याण का आश्चर्यजनक द्वार खोल दिया है।

इस विषय में देव समाज के माननीय कर्मचारी विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान पंडित हर नारायण अग्निहोत्री जी अपने पूजनीय पिता जी की सेवा में दो जगहों में इस प्रकार लिखते हैं :-

(1)

"पूजनीय भगवन!

आप के आत्मिक विकास के अध्ययन से साफ प्रतीत होता है, कि आप अपने हित और सत्य विषयक अनुराग की उन्नति के साथ-साथ ज्यों-ज्यों एक ओर अपने नाना संस्कार प्राप्त मिथ्या विश्वासों के देखने के योग्य होते गए, त्यों-त्यों उन्हें त्याग करते

चले गए और दूसरी ओर आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में विविध प्रकार के सत्यों की खोज में लगातार संग्राम करते रहे। इसी खोज विषयक संग्राम में आप ने अपनी देव ज्योति के विकास में धीरे-धीरे नेचर सम्मत और विज्ञान मूलक धर्म के वह गूढ़ तत्व देखे और मालूम किए, कि जो आप के भिन्न कोई और देख वा मालूम नहीं कर सका था। तब यह आपके आत्मा की कितनी बड़ी विशेषता और महिमा, कि आप किसी अन्ध विश्वास वा किसी प्रचलित धर्म मत के अनुरागी रहने के स्थान में सत्य ज्ञान के अनुरागी होकर सत्य के अनुसन्धान में प्रवृत रहे, और अपने भीतर देव ज्योति विकसित करके आप ने सत्य धर्म के तत्वों को खोज निकाला। महाभारत की कथाओं में मैंने पढ़ा है, कि एक बार देवतों और दैत्यों ने एक पहाड़ की मथानी और सांप की रस्सी बनाकर समुद्र को मथा था, और उस में से अमृत और विष के भिन्न कुछ और चीज़ें भी निकाली थी। अब यद्यपि यह कहानी तो मिथ्या कल्पना के भिन्न और कुछ नहीं; तथापि आपका आत्मिक अथाह समुद्र को मथकर और उस में से मिथ्या कल्पना मूलक मतों के विष को बाहर निकाल कर सत्य ज्ञान के अमृत को निकालना और विज्ञान मूलक सत्य धर्म के तत्वों को प्रगट करना पूर्णत: सत्य कथा है। हे भगवान! तब आप धन्य हैं, आप धन्य हैं। आपके ऐसे सत्य अनुरागी देवरूप को सन्मुख लाकर मैं आपके आगे जितना श्रद्धा से झुकूं और दीन भाव धारण करूं, उतना ही थोड़ा है। ऐसा हो, कि अन्धी दुनिया कभी आप के इस महान देवरूप के देखने, जानने और उसके प्रति श्रद्धावान होने का मौका पा सके, और मैं भी उसकी सच्ची महिमा को फैलाने में ज़रिया बन सकूं।"

(2)

"मेरे अति श्रद्धा और पूजा के योग्य श्री पिता जी!

आप का देव जीवन क्या आप के अद्वितीय देव अनुरागों के विचार से और क्या आत्मा के सम्बन्ध में मिथ्या कल्पना रहित और विज्ञान मूलक सत्य ज्ञान के विचार से पूर्णत: निराला और अद्वितीय है। मुझे आत्मा के सम्बन्ध में नाना प्रकार की मिथ्या गप्पों से भरी हुई दुनिया एक सुनसान जंगल की न्याई प्रतीत होती है, और जैसे हज़ारों मीलों तक रेत से घिरे हुए अफरीका के सहरा में किसी पानी के प्यासे और छाया के चाहने वाले मुसाफिर को अपने सामने किसी पानी के चश्मे वा छायादार वृक्षों के किसी झुंड को देखकर बहुत आशा मिलती है, वैसे ही इस संसार में आप का वजूद मुझे एक अमृत का स्त्रोत और आप की समाज के लोग उन वृक्षों की न्याई प्रतीत होते हैं, कि जो आप के जल (अमृत) से इस वीराने में उत्पन्न हो गए हैं। तब मैं और कहां जाऊं, और अपने हृदय की भूख और प्यास कहां और किस से मिटाऊं, और जीवन की रक्षा और उन्नति के लिए जीवन रस कहां से पाऊं? मुझे आप के और आपको समाज के भिन्न कोई और ठिकाना दिखाई नहीं देता। मेरा हृदय कई बार ऐसे भावों से भरकर और आप को स्मरण करके ऐसी आकांक्षा करता है, और कई बार बहुत ज़ोर से करता है, कि मैं आपके चरणों के साथ लिपट जाऊं।"

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में उन के किसी सेवक का यह कहना भी बिल्कुल सच है, कि

"जीवन दाता हित स्वरूप अमृत के भंडार,

ऐसे उनके रूप पर हम होवे बलिहारी।" हमारी यह हृदय गत कामना है, कि हम लोग देव जीवन धारी भगवान देवात्मा के अद्वितीय देवरूप की सच्ची महिमा को अधिक से अधिक देखें और उपलब्ध करें, और उनके साथ जीवन्त सम्बन्ध स्थापन करके उन की आत्मा और सत्य धर्म के विषय में खोजी और प्रगट की हुई अति गूढ़, अति आवश्यक और अति मूल्यवान सचाइयों का महा दुर्लभ ज्ञान लाभ कर सकें, और उनके अनुसार चलकर और उन्हें चारों ओर फैलाकर अथवा उन के महान कार्य में सेवाकारी बनकर अपना अधिक से अधिक कल्याण साधन कर सकें।

भूल न जाना साथियो सतगुरु की कुर्बानियां।

फिरते थे मारे दर बदर, अब पड़ गए सही राह पर,
कभी सोचते हो साथियों, किस की हैं मेहरबानियां।1

जिसने जगत हित के लिए, बदनामियों के दुख सहे,
सुख स्वाद सेहत छोड़ कर, भेंट धरी जवानियां।2

यकता मिशन घोषण किया, अति कठिन व्रत धारण किया,
और सत्य धर्म खोज कर, मिथ्या की तोड़ी तानियां।3

जब पाप पर हमले किए, पापी आपके दुश्मन बन गए,
और छिड़ गया बेमिसल युद्ध, हैं जिसकी अजब कहानियां।4

हर कदम पर कठिनाई थी, घृणा की बदली छाई थी,
थी गालियों की इक झड़ी, अपयश की तुगयानियां।5

घर बार अपना छोड़ कर, खूने ज़िगर निचोड़ कर,
कर मिन्टगुमरी हिजरतें, जा गर्मियां गुजरानियां।6

थे रोग शय्या पर पड़े, मुशकिल था होंगे उठ खड़े,
कहती थीं मोहलक मर्ज़ की यह, सब की सब निशानियां।7

थी मौत जब मण्डला रही, हुई न निराशा इक घड़ी,
पढ़ देख लो उस वक्त की, देवात्मा की बाणियां।8

यह तप हुआ उनका सफल, दिए सैंकड़ों हृदय बदल,
हैरान है इनसानियत, देख उनकी कामरानियां।9

किस लिए यह तप संग्राम थे, यह हमरे सन्मुख आ सके,
और कर सकें महसूस हम, बेकदरियों की हानियां।10

है वक्त हम पहचान लें, और अपने मन में ठान लें,
लग जाएं उनके मिशन में, यह तुच्छ जिन्दगनियां।11

अधिकारी मनुष्यों में भगवान देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज का अद्वितीय कार्य।

जैसे आँखों से विहीन जन मुसव्वर नहीं बन सकता, और वह किसी के फोटो को देख यह नहीं बता सकता, कि वह किस का फोटो है; और कानों के द्वारा सुनने की शक्ति से विहीन जन किसी का कोई उपदेश नहीं सुन सकता, और यह नहीं जान सकता, कि उस समय कौन-कौन सी बात किसी उपदेष्टा ने ब्यान की है, और जबान से विहीन जन बोलकर अपनी बात किसी दूसरे को नहीं बता सकता, इत्यादि-इत्यादि वैसे ही भगवान् देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज के बिना कोई भी मनुष्यात्मा न अपने भीतर और बाहर के हानिकारक प्रभावों से अपनी योग्यता के अनुसार अपनी नाना प्रकार की आत्मिक हानि से रक्षा कर सकता है, और न ही अपनी योग्यता के अनुसार अपना नाना प्रकार का पूर्ण आत्मिक विकास कर सकता है। क्योंकि नेचर के अटल नियमानुसार अधिकारी आत्माओं के उद्धार और सर्वोच्च कल्याण के निमित्त केवल मात्र भगवान् देवात्मा का ही अद्वितीय आविर्भाव हुआ है, और जिन भी अधिकारी आत्माओं में भगवान देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति और उनके अद्वितीय देव तेज अथवा उनके देव प्रभावों को प्रवेश करके अपना कार्य करने का जिस हद तक अवसर प्राप्त होता है, उस हद तक एक ओर उनकी भीतर और बाहर के हानिकारक प्रभावों से आत्मिक रक्षा होती है, और दूसरी ओर उनके लिए क्या इस लोक में और क्या आगे के लिए बेहद बरकतों का द्वार खुल जाता है। भगवान् देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति और उनके अद्वितीय देव तेज के द्वारा जिस-जिस प्रकार का अति विचित्र और परम कल्याणकारी कार्य अधिकारी जनों पर होता है, उसे संक्षिप्त रूप से दूसरों के लाभ के लिए नीचे दर्ज किया जाता है :-

देव ज्योति का अद्वितीय कार्य।

(1) देवात्मा की इस अद्वितीय देव ज्योति की जब कुछ किरणें किसी अधिकारी मनुष्य के आत्मा में पहुंचती हैं, तब उनके द्वारा उसका आत्मिक अन्धकार दूर होता है, और उसे धर्म के नाम से पहले से प्राप्त कई प्रकार के मिथ्या विश्वास मिथ्या रूप में दिखाई देते हैं, कि जो इस देव ज्योति के बिना उसे पहले कभी मिथ्या दिखाई नहीं देते थे।

(2) देवात्मा की इसी देव ज्योति की किरणों को पाकर किसी अधिकारी आत्मा को अपनी एक वा दूसरी पतनकारी चिन्ता वा पतनकारी अन्य क्रिया अपने लिए पतनकारी वा हानिकारक रूप में दिखाई देती है कि जो उसे पहले इस देव ज्योति के पाने के बिना अपने लिए पतनकारी वा हानिकारक रूप में दिखाई नहीं देती थी।

(3) देवात्मा की इसी देव ज्योति की किरणों को पाकर किसी अधिकारी आत्मा को एक वा दूसरा उच्च वा सात्विक भाव सुन्दर और अपने लिए

हितकर रूप में दिखाई देता है, कि जो इस देव ज्योति के मिलने से पहले उसे सुन्दर और हितकर रूप में दिखाई नहीं देता था।

(4) देवात्मा की इसी देव ज्योति की किरणों को पाकर किसी अधिकारी आत्मा को अपनी एक वा दूसरी हीनता दिखाई देती है। कि जो इस देव ज्योति के मिलने से पहले उसे कुछ भी दिखाई नहीं देती थी।

अपनी इसी देव ज्योति के द्वारा अधिकारी आत्माओं में उच्च परिवर्तन लाने के निमित्त परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपने दैनिक साधनों में अपने शुभ कामना विषयक जिस संगीत का गान करते रहे हैं, और अब देव लोक से करते रहते हैं, उसके कुछ पद यह हैं :-

आत्म तिमर हर देव ज्योति मम्,
आत्म प्रकाशक देव ज्योति मम्,
आत्म बोध प्रद देव ज्योति मम्,
चारों दिग वह परकीरण हो।
तिमिर से निकले जन अधिकारी,
आत्म रूप देखें अधिकारी,
आत्म रोग देखें अधिकारी,
आत्म पात देखें अधिकारी,
आत्म हित देखें अधिकारी,
आत्म ज्ञान उन में उत्पन्न हो
सत्य धर्म का ज्ञान उत्पन्न हो।

फलत: इस देव ज्योति के यह सब चमत्कार और लक्षण जैसे अद्वितीय हैं। वैसे ही यह देव ज्योति जिस देवात्मा में विकसित हुई है, वह उनके देवरूप की अद्वितीय महिमा का प्रकाटय प्रमाण है।

देव तेज का अद्वितीय कार्य।

(1) देवात्मा के इस अद्वितीय देव तेज की जब कुछ किरणें किसी अधिकारी आत्मा में प्रवेश करने का अवसर पाती हैं; तब उसे उन्हीं की देव ज्योति की किरणों के मिलने से पहले आत्मा वा धर्म के विषय में जो कोई विश्वास वा मत मिथ्या दिखाई दिया हो, उस मिथ्या विश्वास वा मिथ्या मत के प्रति उस में उच्च घृणा की उत्पत्ति होती है, कि जो उच्च घृणा उस में पहले नहीं होती; और यदि उस में इस देव तेज की किरणें इतनी मात्रा में प्रवेश कर सकें, कि जितनी मात्रा में प्रवेश करने से ही नेचर के आत्मिक जगत् के नियमानुसार उसके उस मिथ्या विश्वास वा मत का पूर्ण नाश हो सकता है, तो उतनी मात्रा में इस उच्च घृणा के उत्पन्न हो जाने पर उस के लिए उस प्रिय मिथ्या विश्वास वा मिथ्या मत को परित्याग करना और उससे सत्य मोक्ष लाभ करना अनिवार्य हो जाता है।

(2) देवात्मा के इस अद्वितीय देव तेज की जब कुछ किरणें किसी अधिकारी आत्मा में प्रवेश करती हैं, तब उन से उन्हीं की देव ज्योति की किरणों को पाकर अपनी जो कोई पतनकारी चिन्ता वा अन्य क्रिया अपने लिए पतनकारी वा हानिकारक रूप में दिखाई दी हो, उस पतनकारी चिन्ता वा अन्य क्रिया के लिए उस में उच्च घृणा की उत्पत्ति होती है, कि जो उच्च घृणा उस में पहले नहीं होती, और यदि उस में इस देव तेज की किरणें इतनी मात्रा में प्रवेश कर सकें, कि जितनी मात्रा में प्रवेश करने पर ही नेचर के आत्मिक जगत् के नियमानुसार उस की उस पतनकारी चिन्ता वा पतनकारी अन्य क्रिया का

पूर्ण नाश हो सकता है, तो उतनी मात्रा में इस उच्च घृणा के उत्पन्न होने पर उसके लिए अपनी उस पतनकारी चिन्ता वा अन्य क्रिया का परित्याग करना और उससे सत्य मोक्ष लाभ करना अनिवार्य हो जाता है।

(3) देवात्मा के इस अद्वितीय देव तेज की जब कुछ किरणें किसी अधिकारी मनुष्य में प्रवेश करती हैं, तब उसे उन्हीं की देव ज्योति की किरणों को पाकर अपना जो-जो आत्मिक विकार अपने आत्मा के लिए हानिकारक वा पतनकारी रूप में दिखाई दिया हो, उस विकार के सम्बन्ध में उच्च दुख की उत्पत्ति होती है, कि जो उच्च दुख उस में पहले नहीं होता। और यदि उस में इस देव तेज की किरणों इतनी मात्रा में प्रवेश कर सकें, कि जितनी मात्रा में प्रवेश करने पर ही नेचर के आत्मिक जगत् के नियमानुसार उस की अपने उस पतनकारी आत्मिक विकार से शुद्धि हो सकती है, तो उतनी मात्रा में इस उच्च दुख के उत्पन्न होने पर उस के लिए अपने आत्मिक विकार के सम्बन्ध में हानिपरिशोध करके उस के द्वारा जहां तक सम्भव हो, उस से सत्य पवित्रता वा सत्य मोक्ष लाभ करना अनिवार्य हो जाता है।

(4) देवात्मा के इस अद्वितीय देव तेज की जब कुछ किरणें किसी आत्मा में प्रवेश करती हैं, तब उसे उन्हीं की देव ज्योति की किरणों को पाकर जो कोई उच्च वा सात्विक भाव सुन्दर और अपने लिए हितकर रूप में दिखाई दिया हो, उसके प्रति उस में आकर्षण उत्पन्न होता है; कि जो आकर्षण उस में पहले नहीं होता। और यदि देवात्मा के इस देव तेज की किरणें उसे लगातार मिल सकें, और वह उन्हें ग्रहण कर सके, तो उन की आवश्यक मात्रा में प्राप्ति से आत्मिक जगत् के नियमानुसार उसके भीतर का वह आकर्षण भाव धीरे-धीरे और भी उन्नत हो सकता है, और वह उच्च वा सात्विक भाव के उच्च सुख का अनुरागी भी बन सकता है, और उसका अनुरागी बनने पर उस के द्वारा अपने आत्मा में उच्च जीवन का विकास कर सकता है।

अधिकारी जनों में अपने इसी देव तेज के द्वारा उच्च परिवर्तन उत्पन्न करने के निमित, देवात्मा अपने दैनिक साधन में अपने शुभ कामना विषयक जिस संगीत का गान करते रहे हैं, और अब देव लोक से करते रहते हैं, उसके पद यह हैं :-

उच्च घृणा पद देव तेज मम्,
उच्च दुख प्रद देव तेज मम्,
नीच राग हर देव तेज मम्,
नीच घृणा हर देव तेज मम्,
चारों दिग वह परकीरण हो;
उच्च घृणा पावें अधिकारी
उच्च दुख पावें अधिकारी
नीच राग त्यागें अधिकारी
नीच घृणा त्यागें अधिकरी
आत्म-रोग से निस्तारन हो।
आत्म-पतन से निस्तारन हो।
नीच गति से निस्तारन हो।
परम लक्ष्य मेरा पूरन हो,
जीवन व्रत मेरा पूरन हो।
उच्च भाव प्रद देव तेज मम्,

उच्च राग प्रद देव तेज मम्,
चारों दिग वह परकीरण हो;
उच्च भाव पावें अधिकारी
उच्च राग पावें अधिकारी
उच्च अंग पावें अधिकारी
उच्च गति पावें अधिकारी
उच्च रूप उनमें उत्पन्न हो।
श्रेष्ट रूप उनमें उत्पन्न हो।
आत्म बल उनमें उत्पन्न हो।
जीवन बल उनमें उत्पन्न हो।
परम लक्ष्य मेरा पूरन हो,
जीवन व्रत मेरा पूरन हो।

वाह! भगवान् देवात्मा की सारे जगत् परम कल्याण के सम्बन्ध में कैसी अनोखी देव कामना और उनके देव प्रभावों का कैसा अनोखा और महा हितकर कार्य!!

अन्त में हमारी यह हृदय गत कामना है, कि अधिक से अधिक संख्या में अधिकारी आत्माओं में परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न महा दुर्लभ देव प्रभावों का कार्य हो, और वह जहां खुद परम आवश्यक मूल सम्बन्धी भगवान देवात्मा के अधिकार में आकर क्या इस लोक में और क्या आगामी काल में अधिक से अधिक बरकतों को लाभ करें, वहां अपने परम गुरु भगवान् देवात्मा की सच्ची महिमा को चारों ओर फैलाकर अपने इस श्रेष्ट अधिकार और अपने जीवन की शक्तियों को सफल कर सकें।

गुरु अनुरागी बनने की आकांक्षा।

मेरे दिल का मालिक तू ऐ सतगुरु हा,
फ़िदा जाऊं तुम पर यही आरजू हो। (1)
जिस्म मेरा गो तुम से हो दूर कितना,
ये दिल हर वक्त तेरे ही रूबरू हो। (2)
समाया रहे तेरा ही दिल में सौदा,
मुझे हर घड़ी तेरी ही जुसतजू हो। (3)
तुम्हारी ही सेवा में आयू गुज़ारूं,
सुधारूं मैं परलोक को सुरखरू हो। (4)
बसूं आप के देव असरों में हरदम,
कि दिल में मेरे आपका रंगो बू हो (5)
मेरा दिल न हो नीच रागों का आशिक,
प्रेम आपका अगर उस में गुरू हो। (6)

सच्ची स्वाधीनता वा स्वतंत्रता के दाता भगवान देवात्मा।

(लेखक श्रीमान बरव्शी रत्न चन्द जी जौहर कर्मचारी देव समाज)

यूरोप के देशों की देखा देखी हमारे देश में भी आज कल राज्य विषयक स्वतंत्रता वा स्वाधीनता की बहुत पुकार मचाई जा रही है, और बार-बार यह शब्द ऐसी स्वाधीनता के नेताओं के मुख से सुने जाते हैं, कि "आज़ादी हमारा पैदाइशी हक है।" बेशक राजके काम काज और प्रबन्ध आदि के विषय में आज़ादी भी अपने तौर पर अच्छी चीज़ है, और यदि वह हमारे देश वासियों को प्राप्त हो सके, तो अच्छी बात है। परन्तु ऐसी स्वाधीनता के प्राप्त हो जाने पर भी उस को काम में लाने वाले जन वर्तमान हालात में क्या हमारे वर्तमान शासन कर्ताओं की अपेक्षा भी वही अधिक स्वार्थी और नीच जीवन धारी न होंगे, कि जिनकी ही बदौलत हमारा देश इस दुर्दशा की अवस्था को पहुंचा हुआ है? निश्चय वही जन होंगे। फिर वह ऐसी आज़ादी प्राप्त हो जाने पर क्या अब की अपेक्षा भी अपने देश वासियों को अधिक सताने और हानि पहुंचाने वाले प्रमाणित न होंगे, जैसा कि पहले बहुत से दृश्यों के भिन्न आज कल ही मुम्बई और संयुक्त प्रान्त में हिन्दु मुसलमानों का फसाद और म्यूनिस्पल कमेटी को तोड़ देने का दृश्य प्रकाश कर रहा है।

हां हमारे देश का तो क्या कहना है, जिन देशों में बाहर का पूर्ण स्वराज भी वर्तमान है, वहां पर यद्यपि हमारे देश की अपेक्षा बाहर के विचार से कुछ अधिक खुशहाली है, तो भी उनके रहने वाले जनों के आत्मिक दासत्व अर्थात् नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के बन्धुए होने के कारण क्या उनका विविध सम्बन्धों में अत्यन्त बुरा हाल नहीं हो रहा? और तो और क्या वह आपस में ही एक दूसरे को पीस डालने के लिए बड़े-बड़े जथे बनाकर अपनी सारी शक्यिां एक दूसरे की तबाही के लिए खर्च नहीं कर रहे? अवश्य कर रहे हैं, और उन की सब विद्या, विज्ञान, कहलाने वाले धर्म मत वा विश्वास आदि उन्हें इस से रोकने वा बचाने के असमर्थ्य है। तब मनुष्य को इस बाहर की राजनैतिक स्वतंत्रता की अपेक्षा और उससे पहले जिस आत्मिक स्वतंत्रता के प्राप्त होने की नितान्त आवश्यकता है, उसके देने के लिए भगवान देवात्मा के आविर्भाव के भिन्न इस पृथ्वी पर और कोई ठिकाना नहीं।

मनुष्य के अस्तित्व में उसकी आत्मा ही मुख्य वा मूल वस्तु है, और उसमें दो ही प्रकार की बड़ी कार्यकारी शक्तियां हैं, अर्थात् (1) उसकी मान्सिक शक्तियां और (2) उसकी भाव शक्तियां। फिर इन में से भी उसकी भाव शक्तियां ही उस की परिचालक हैं। इसलिए जब तक उसकी इन भाव शक्तियों में उच्च परिवर्तन पैदा न हो, अर्थात् उस के नीच भाव जो उसके भीतर नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं के रूप में परिणत होकर उसे क्या अपने और क्या और अस्तित्वों के सम्बन्ध में मिथ्या चारी और हानिकारक बनाते हैं, वह दमन न हों, और जो उच्च वा सात्विक भाव उसे स्वार्थपरता से निकाल कर विविध सम्बन्धों में हितकर और सेवाकारी

बनाते हैं, वह उत्पन्न वा उन्नत न हों, तब तक उसकी बाहर की आज़ादी, उसकी सभ्यता, उसकी विद्या वा विज्ञान की उन्नति, उसकी धन विषयक वृद्धि आदि की शक्तियां केवल यही नहीं ही कि उसके लिए हितकर प्रमाणित नहीं हो सकती, किन्तु कुछ काल के लिए उस के लिए सुख कर होकर भी आखिरकार उस की महा हानि का कारण बनती हैं, जैसे कि चारों ओर बन रही हैं।

अब तक विविध कहलाने वाले धर्म मतों के नेताओं ने मनुष्य को इन दोनों पहलुओं अर्थात् क्या उसके ज्ञान और क्या भावों के विचार से आज़ाद करने के स्थान में उल्टा उसे अधिक दास और बन्धु बनाने का काम किया है। उन्होंने उसे सिखाया कि जो कुछ उनकी कहलाने वाली श्रुतियों वा इल्हामी पुस्तकों में लिखा है, वही केवल मात्र सत्य और सारी नेचर का पूरा-पूरा ज्ञान है। उन से बाहर और कोई सच्चा ज्ञान नहीं है (जब कि यह बात नेचर की सच्ची घटनाओं और अटल नियमों के पूर्णत: विरुद्ध है।) इस लिए जो लोग उन से बाहर वा उन से विरुद्ध कोई बात कहते वा विश्वास करते हैं, वह सब नास्तक वा मलेछ वा काफर वा हैरीटिक आदि हैं, और उन पर जितना भी अत्याचार किया जावे, वह थोड़ा है। इसलिए यद्यपि दुनिया का इतिहास एक मत वालों की ओर से दूसरे मत वालों पर महा अत्याचारों से भरा पड़ा है, तथापि उन्होंने यह कहकर कि "विश्वास ही धर्म का मूल है," मनुष्य को अपना अन्ध विश्वासी बनाया हुआ है, और उसकी मान्सिक उन्नति के द्वार को ताले लगाकर उसके लिए सच्चाई तक पहुंचने में सख्त रूकावटें खड़ी की हैं, और अब तक भी उसको बहुत कुछ गुलाम बनाया हुआ है।

दूसरी ओर भावों के विचार से ऐसे कहलाने वाले नेताओं ने मनुष्य के हृदय में कोई सच्चा उच्च परिवर्तन उत्पन्न करने के असमर्थ्य होकर उल्टा उसके नीच सुखों और स्वादों की तृप्ति के इस दुनिया वा अगली दुनिया में अधिक से अधिक लालच देकर उनके लिए उसके दासत्व को और भी बढ़ाया है, वा संसार में दुखों के महा भयानक दृश्य पेश करके उसे अपने सब सम्बन्धियों से कटकर और उनके सम्बन्ध में अपने कर्तव्यों से मुंह मोड़कर जंगल में चले जाने और निहायत निकम्मा जीवन व्यतीत करने में परमानन्द की प्राप्ति बताई है। गोया हर तरह से उसको स्वार्थ और नीच सुखों का परले दर्जे का दास बनाने का यत्न किया है, कि जिस से उस के पापाचारों और दुराचारों में कोई कमी आने की बजाय उल्टा वह बढ़ते चले गए हैं।

मनुष्य की ऐसी महा कृपापात्र अवस्था में उच्च परिवर्तन लाने और उसकी उन्नति के इस बन्द मार्ग को खोलने के लिए ही नेचर के विकास क्रम में आत्मिक जगत् के सूर्य भगवान देवात्मा का आविर्भाव हुआ है। उन्होंने अपने सत्य और शुभ के पूर्ण अनुरागों और असत्य और अशुभ के प्रति पूर्ण घृणा शक्तियों के क्रमश: विकास के द्वारा जिस अद्वितीय देव ज्योति और अद्वितीय देव तेज को लाभ किया है और मनुष्यात्मा के रूप और उसके जीवन के सम्बन्ध में जिन अति गूढ़ और महा हितकर सत्यों को खोजा और प्रगट किया है और उनकी बिना पर मनुष्य के लिए क्या ज्ञान और क्या

भावों के विचार से जिस सच्ची और महा हितकर स्वतंत्रता के देने का द्वार खोल दिया है, उस की महिमा शब्दों में वर्णन नहीं कर जा सकती है।

ज्ञान के विचार से जहां कहलाने वाले धर्म मतों ने अपनी अलग-अलग कहलाने वाली धर्म पुस्तकों के ऊपर परमात्मा वा खुदा के हुकम की मोहर लगाकर मनुष्य को उनका अन्ध विश्वासी बना रखा है-चाहे उन में कैसी ही मिथ्या और हानिकारक शिक्षा दी गई हो-वहां भगवान देवात्मा ने आत्मा और धर्म विषयक जो विज्ञान-मूलक सत्य शिक्षा दी है, उस को भी अन्ध विश्वास के द्वारा मान लेने का आदेश नहीं दिया, किन्तु प्रत्येक बात की सत्यता को परख वा पड़ताल कर मानने की आज्ञा दी है, यथा :-

देव शास्त्र के दूसरे खण्ड के चौथे अध्याय में किसी विषय में कौन सी बात सत्य है वा सत्य नहीं है, इसकी पहचान वा परख के लिए विज्ञान-मूलक चार कसौटियां देने के अनन्तर पूजनीय भगवान् ने फरमाया है :-

प्रश्न :- क्या देवात्मा की शिक्षा भी जो उन्हों ने आत्मा और आत्मिक जीवन वा धर्म के विषय में दी है, इन्हीं चारों कसौटियों के द्वारा परखी जा सकती है?

उत्तर :- निश्चय! यदि उन की भी कोई शिक्षा इन चारों कसौटियों में से किसी कसौटी के अनुसार ठीक प्रमाणित न हो, तो वह भी सत्य मानने के योग्य नहीं।"

वाह! मनुष्य को सचाई और केवल सच्चाई की ओर ले जाने के लिए इस से बढ़कर स्वतंत्रता वा आज़ादी और क्या हो सकती है? और यह स्वतंत्रता केवल मात्र पूर्ण सत्य अनुरागी भगवान देवात्मा ही दे सकते थे, कि जो कुछ वैज्ञानिक कसौटी पर परख कर ठीक उतरे, उसी को सच मानो और विश्वास करो, और किसी और बात को कभी सच न मानो और न विश्वास करो, वह चाहे ईश्वर की बाणी वा खुदा के नाम वा किसी देवी देवता वा किसी सम्प्रदाय की बानी वा नबी वा पीर आदि की ओर से सत्य क्यों न बताई गई हो।

फिर हृदय के भावों के विचार से जहां विविध सम्प्रदायों के नेताओं ने यह शिक्षा दी है, कि मनुष्य को ईश्वर ने स्वतंत्र बनाया है अर्थात् वह अपनी इच्छा के अनुसार भले वा बुरे कर्म कर सकता है। परन्तु उन्हें यह ज्ञान ही नहीं हुआ, कि मनुष्य अपने भीतर के भावों से परिचालित होकर ही कोई भली वा बुरी चिन्ता वा क्रिया कर सकता है; और उसके भाव यदि बुरे वा नीच हों, तो उस के भीतर भला करने की इच्छा ही नहीं हो सकती और यदि कभी ऐसी इच्छा उत्पन्न भी हो जाए, तो वह अपनी नीच शक्तियों का बन्धुआ होने के कारण भली गति कर नहीं सकता। भगवान् देवात्मा ने ही इस सत्य को देखकर अपने देव प्रभावों के द्वारा अधिकारी मनुष्यात्माओं के भावों में उच्च परिवर्तन लाने का निराला कार्य आरम्भ किया है और सैकड़ों और हजारों जनों के हृदयों के नीच भावों को दमन करके उन्हें उनके पंजे से उनकी योग्यता के अनुसार एक वा दूसरे अंग वा एक वा दूसरी सीमा तक सच्ची आज़ादी दी है। अर्थात् वह जो विविध सम्बन्धों में पाप और अन्याय करने के लिए लाचार

थे, उन्हें ऐसी बेबसी वा लाचारी की कृपा पात्र हालत से ऊपर कर दिया है। हां सैकड़ों को यहां तक बलवान बना दिया है, कि वह अपने किए हुए पहले पापों का भी उचित परिशोध करने के योग्य हुए हैं। और उन्हों ने और बातों के भिन्न दूसरों का अपहरण किया हुआ हज़ारों रुपया दुखी दिल के साथ वापिस किया है। फिर जहां हमारे देश में स्वराज वा धर्म की पुकार मचाने वाले कितने ही अगुआ वा लीडर जन भी पब्लिक का सैकड़ों और हज़ारों रुपया एक वा दूसरे फण्ड के नाम से इक्टठा करके खुद हज़म कर रहे हैं और विविध सम्प्रदायों में आपस में एक दूसरे के विरुद्ध नीच घृणा के भड़काने का काम कर रहे हैं, वहां भगवान् देवात्मा ने कितने ही जनों को अपने देव प्रभावों का दान देकर इतना बलवान बना दिया है, कि वह दुनिया के सुखों और स्वादों को प्रकृत रूप से त्याग कर उच्च कोटि के परोपकारी बन गए हैं, और अपने पास से खाकर बिना किसी मुआवज़े के अथवा निहायत थोड़ी सी वृत्ति लेकर उन के परम हितकर कार्य में सेवाकारी बन रहे हैं, और विविध सम्बन्धों में नीच घृणा पैदा करके उन्हें फाड़ने के स्थान में ऐसी घृणा को दूर करके उन में सच्चा मेल, सच्चा सुख वा शान्ति ला रहे हैं। फिर हित स्वरूप भगवान देवात्मा ने जो दुनिया भर में पूर्णत: निराली धर्म समाज अर्थात् देव समाज स्थापन की है, उस में प्रत्येक जन को सच्चाई और भलाई की गतियां करने के लिए न केवल सब तरह से आज़ादी हासिल है, किन्तु उसमें हर तरह से सहायता प्राप्त होती है, और झूठ और पाप की गतियां करने में कदम-कदम पर रूकावटें पैदा की जाती है, यही मनुष्य के लिए सच्ची आज़ादी है, कि जो दुनिया भर की किसी भी सभा वा सोसाइटी में वर्तमान नहीं है, और केवल भगवान् देवात्मा की स्थापना की हुई देव समाज में ही है।

तब प्रिय पाठक गण! यदि आप सच्ची मान्सिक और हार्दिक स्वतंत्रता चाहते हों और अपने आपको आत्मिक विचार से बलवान बनाकर विविध प्रकार की नीच गुलामी और उस के महा भयानक दुखों से सच्ची मोक्ष पाना चाहते हों, तो सत्य और हित के पूर्णांग अनुरागी, महा बली भगवान देवात्मा की शरण ग्रहण करें और उन के साथ अपना सच्चा आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करके, और उनके देव ज्योति और देव बल दाता देव प्रभावों को लाभ करके अपना और अपने सम्बन्धियों का सच्चा कल्याण करें।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

एक महान सत्य के दर्शन

श्रीमान सरमुख सिंह जी एडवोकेट, जो भगवान देवात्मा देवात्मा के सेवक और देव समाज के कर्मचारी थे, का पत्र जहां उनके हृदय की विशेषता को प्रगट करता है, वहां इस महान सत्य को भी प्रगट करता है कि ऊंचे से ऊंची मानसिक शिक्षा और संसार की सब प्रचलित फिलासफियां और विद्याएं मनुष्य को अपने आत्मिक जीवन का सत्य ज्ञान नहीं दे सकती और उसको अपनी असल अवस्था नहीं दिखा सकती। इसी लिए एक विचारशील ने कहा था कि मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियों से चांद पर तो पहुँच जाएगा, परन्तु अभी तो उसने पृथ्वी पर रहना भी नहीं सीखा। पृथ्वी को उसने नर्क बना दिया है। चांद पर भी वह अपने नीच भावों से यही लीला पैदा करेगा। आत्मिक जीवन के सत्य ज्ञान के लिये जीवन ज्योति की आवश्यकता है, देव ज्योति की अवश्यकता है। उसके बिना अन्धकार ही अन्धकार है। श्रीमान सरमुख सिंह जी ने इसी सत्य को निम्नलिखित पत्र में अनुभव किया है–

इस पत्र में वह भगवान देवात्मा के चरणों में लिखते हैं –

"जीवन ज्योति दाता! आप की ज्योति के बिना अन्धेरा ही अन्धेरा। पढ़ लिखकर भी अन्धेरा, अनपढ़ रह कर भी अन्धेरा, धनवान होकर भी अन्धेरा, निर्धन हो कर भी अन्धेरा, जवान होकर भी अन्धेरा और बूढ़ा होकर भी अन्धेरा, सांसारिक कोई पदवी रख कर भी अन्धेरा, और उससे वंचित होकर भी अन्धेरा, राजा होकर भी अन्धेरा, प्रजा होकर भी अन्धेरा, स्वामी होकर भी अन्धेरा और भृत्य होकर भी अन्धेरा, बाप होकर भी अन्धेरा और बेटा होकर भी अन्धेरा, पति होकर भी अन्धेरा और पत्नी होकर भी अन्धेरा, शिक्षक होकर भी अन्धेरा और शिक्षार्थी होकर भी अन्धेरा, पुरुष होकर भी अन्धेरा और स्त्री होकर भी अन्धेरा, हिन्दु होकर भी अन्धेरा और मुसलमान होकर भी अन्धेरा, सिक्ख होकर भी अन्धेरा और ईसाई होकर भी अंधेरा, विज्ञान और सभ्यता के समय में जन्म पाकर भी अंधेरा और सुसभ्य राजविधि (Civilised Government) के अधीन रह कर भी अंधेरा। हां आप की ज्योति के बिना आप का सेवक होकर भी अंधेरा और आप की स्थापन की हुई देव समाज का कर्मचारी होकर भी अंधेरा। इस सत्य को मैं इस समय अपने निज के साधन में आप की कृपा से विशेष रूप से अनुभव कर रहा हूँ और चारों ओर निगाह ले जाकर इस सत्य को सत्य पाता हूं और सत्य देखता हूं। हर देश में सत्य देखता हूँ और हर काल में सत्य देखता हूं। इस प्रकार इस सत्य को बहुत उज्जवल रूप से देख कर स्वभावत: अन्धकार और अन्धकार लाने वाले और बढ़ाने वाले सम्बन्धियों से भाग कर, जब आपके ज्योति दायक रूप तक पहुँचता हूँ, तो कुछ धैय पाता हूँ। उसके साथ ही यह स्पष्ट रूप से अनुभव करता हूं कि आप ही एक ऐसे सम्बन्धी हैं कि जिन से यदि मैं ज्योति और शक्ति लाभ करता जाऊं, तो जी सकता हूँ, नहीं तो अवश्य मर जाऊंगा; मेरा अवश्य नाश हो जाएगा। ऐसे दृश्य के

सन्मुख आने पर मेरे भीतर से स्वभावत: बड़े वेग के साथ यह प्रार्थना निकल रही है कि यह जीवन ज्योति मुझे अधिक से अधिक प्राप्त हो, प्रति दिन प्राप्त हो, प्रतिपल प्राप्त हो और प्रति मुहूर्त प्राप्त हो। सोते और जागते मेरे साथ हो। तब ही मैं अपने नाना व्यवहारों में उचित रूप से चल कर आप बच सकता हूँ और औरों को बचा सकता हूँ। मुझे ऐसे सम्बन्धी अधिक से अधिक प्राप्त हों, कि जिन से मैं ऐसी ज्योति लाभ कर सकूं। मेरी लगन ऐसे सम्बन्धियों के साथ अधिक से अधिक बढ़ती जावे कि जो मेरे भीतर ऐसी ज्योति को अधिक से अधिक संचार कर सकें।

मैं देखता हूँ, कि मैं आप का सेवक होकर और आप की समाज का कर्मचारी होकर भी जब ही इस ज्योति से वंचित हो जाता हूं, तो मेरी गति बेसुधि की गति हो जाती है, मुझे दिखाई देना बन्द हो जाता है। अपना नाश दिखाई नहीं देता। मैं समझता हूं कि मैं अच्छा भला हूं। अच्छी तरह रहता हूं, अच्छी तरह काम काज करता हूँ, अच्छी तरह किसी को कुछ सुना भी देता हूँ। परन्तु हे जीवन दाता! आप की ज्योति मिलने पर स्पष्ट रूप से अनुभव करता हूं कि मेरा वह सब कुछ करना जीवन की ओर नहीं ले गया। मुझे नहीं ले गया, इस लिए मैं किसी ओर को भी अपने बर्ताव से जीवन की ओर नहीं ले जा सका। ओह! तब आप की ज्योति की मेरे लिए और इस संसार के लिये कितनी बड़ी आवश्यकता है। इसलिए बार-बार मैं यही प्रार्थना करता हूँ, कि आप का ऐसा आशीर्वाद हो, कि मैं आप से अधिक से अधिक ज्योति लाभ करने का अधिकारी रह सकूं। मैं अपनी ऐसी अवस्था और सम्बन्धों से सर्वथा उद्धार पा सकूं, कि जो मुझे ज्योति की ओर नहीं ले जाते। मैं ऐसे इन्द्रिय सुखों को छोड़ दिया करूं, मैं ऐसे सम्बिन्धियों के अनुचित अधिकार से निकल आया करूं, मैं ऐसी लालसाओं और वासनाओं की ओर ध्यान न दिया करूं, कि जो मुझे आप की परम हितकर ज्योति की ओर जाने नहीं देती। ऐसे आपके आशीर्वाद का मैं आज बार-बार भिखारी बनता हूँ।

मैं देखता हूँ कि मुझे काम बहुत करना है। मैंने अपने ही बहुत बड़े दायित्व को पूरा करना है। मनुष्य बन कर और एक बार उसके सबसे उच्च अधिकार को आप की ज्योति में जान कर, मैं अब उस से गिरना नहीं चाहता। मेरी नीच इच्छाएं, मेरी अबोधता और मेरी अयोग्यता निश्चय मुझे इस अधिकार से गिराना चाहती हैं, और नीचे की ओर ले जाना चाहती हैं। परन्तु मैंने अब पूरे और सच्चे दिल से आपकी शरण ली है, और आप से शक्ति पाकर अब मैं निश्चय उस मार्ग की सारी रोकों पर जय लाभ करूंगा। अन्त में मैं आप से यह आशीर्वाद प्रार्थना करता हूँ कि आप की शक्ति मुझे हिलाए और अधिक से अधिक हिलाए, मुझे व्याकुल करे और अधिक से अधिक व्याकुल करे। मेरे अपने हित के लिये मुझे व्याकुल करे और मेरे और धर्म साथियों के हित के लिये मुझे व्याकुल करे, और मेरे और देशवासियों के हित के लिए व्याकुल करे। मैं आप की ज्योति और शक्ति को अधिक से अधिक पाता जाऊं और उससे अपना और औरों का हित साधन करता जाऊं।

WPP - Regd. CHD. 0077/09-011 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88 20 नवम्बर 2009

महोत्सव का कार्यक्रम

परम पूजनीय भगवान देवात्मा संस्थापक देवधर्म का 159 वां वार्षिक शुभ जन्म महोत्सव धर्मशाला 18 डी चण्डीगढ़ में 1 दिसम्बर, 2009 से 4 दिसम्बर, 2009 तक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर पहुंच कर अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

महोत्सव का कार्यक्रम

सोमवार 1 दिसम्बर, 2009

प्रवेश सभा – 4.00 बजे सायं

मंगलवार 2 दिसम्बर 2009

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध

2. **पब्लिक लैक्चर 4.00 बजे**

वक्ता – प्रिंसीपल मिसिज सुरजीत बराड़

बुधवार 3 दिसम्बर 2009
(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रातः

1. **पहली सभा 8.30 बजे प्रातः**

विषय : भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बंध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता, धन और जन की अपील।

2. **दूसरी सभा 1.30 बजे दोपहर,**

विषय : बच्चों की सभा और संगीत सभा।

3. **पब्लिक लैक्चर 4.00 बजे सायं,**

वक्ता – डॉ. विनोद खेड़ा।

4. दीप माला 6.00 बजे सायं
   कोई हितकर सुझाव

वीरवार 4 दिसम्बर, 2009

1. **पहली सभा 8.00 बजे प्रातः**

विषय : सेवक, सेवकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2. भाव प्रकाश

3. देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट : 1. कृपया सेवक सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों।

2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तरे अवश्य साथ लाएं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts